

# रोपण

। वर्ष-5 । अंक-04 । माह-दिसंबर 2024 । हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका । राजनांदगांव से प्रकाशित । पृष्ठ-42 । मूल्य-60/-



**कद्दू की वैज्ञानिक  
उत्पादन प्रौद्योगिकी**



**गुलदाऊदी की  
व्यावसायिक खेती**



**अरहर की फसल पर लगने वाले  
रोग की पहचान एवं प्रबंधन**



**Waste Decomposer : A  
Sustainable Solution for  
Transforming Indian  
Agriculture**



RNI NO.- CHHBIL/2020/79641

# रोपण (मासिक)

वर्ष-05 अंक-04 माह- दिसंबर 2024 मूल्य-60/-



संपादक

डॉ. अमित नामदेव



सलाहकार संपादक

डॉ. पी. डी. वर्मा



सह-संपादक

गौरव कुमार

विक्रम वाजपाई



तकनीकी संपादक

डॉ. द्विवेदी प्रसाद

डॉ. मनमोहन बिसेन

डॉ. मुकेश कुमार साहू

डॉ. शमशेर आलम



कानूनी सलाहकार

रीमा चेलक

( अधिवक्ता )

## मुद्रण का स्थान

प्रधान प्रिंटिंग प्रेस, हनुमान मंदिर के पास

राजातालाब रायपुर या सागर प्रिंटर्स, पुरानी बस्ती,

अमीन पारा रायपुर ( छ.ग. ) पिन कोड-492001

## अंदर के पन्नों में.....

विषय वस्तु	पृ.क्र.
मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की पहल पर किसानों की ...	03
मासिक कृषि कार्ययोजना (दिसम्बर)	04
गुलदाउदी की व्यावसायिक खेती	05
करेला: एक गुणकारी और स्वास्थ्यवर्धक सब्जी	08
कद्दू की वैज्ञानिक उत्पादन प्रौद्योगिकी	12
गोभीवर्गीय फसलों में बीज उत्पादन तकनीक	20
अरहर की फसल पर लगने वाले रोगों की पहचान....	27
जैविक कीट नियंत्रण में ट्राइकोग्रामा प्रजाति का महत्व	28
जिंक की कमी से घटेगी पौधे की बढ़वार.....	29
संकर धान की खेती कैसे करे	31
किसानों की आय में वृद्धि के लिए ठेका खेती के फायदे	33
Waste Decomposer: A Sustainable Solution for	35

रायपुर कार्यालय- गली नं.-6, वैष्णो देवी मंदिर के पास, लक्ष्मीनारायण मंदिर के पीछे,  
वार्ड नं.-54, शाश्वत नगर, बोरियाखुर्द, रायपुर (छ.ग.) 492013

क्षेत्रीय कार्यालय - सिंचाई कालोनी, कैलाश नगर, राजनांदगांव (छ.ग.) 491441

ई.मेल.-ropan.info@gmail.com

फोन नं.- 9174454149

समस्त विवादों का न्यायालयीन क्षेत्र राजनांदगांव होगा। मासिक रोपण में प्रकाशित लेख, सामग्री में संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है, उसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं होगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ. अमित नामदेव द्वारा प्रधान प्रिंटिंग प्रेस, राजातालाब रायपुर या सागर प्रिंटर्स, पुरानी बस्ती अमीन पारा रायपुर से मुद्रित कर व म.नं.-755/3, वार्ड नं.-29, सिंचाई कालोनी, कैलाश नगर, राजनांदगांव (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक-अमित नामदेव।

# कद्दू की वैज्ञानिक उत्पादन प्रौद्योगिकी

पी मूर्वेथन, उत्तम सिंह एवं सुमन सिंह

भाकृअनुप-राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान, बरौंडा रायपुर (छ.ग.)



## परिचय

- कद्दू, जिसे हिंदी में कद्दू और अंग्रेजी में 'Pumpkin' कहा जाता है, एक बहुमुखी और पोषक तत्वों से भरपूर सब्जी है। यह न केवल हमारे भोजन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, बल्कि कई सांस्कृतिक और औषधीय उपयोग भी रखता है।

## कद्दू का पौष्टिक मूल्य

- कद्दू विटामिन ए, सी और ई, पोटैशियम, और फाइबर का एक समृद्ध स्रोत है। इसका नियमित सेवन आंखों की रोशनी को बेहतर बनाता है, प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करता है, और हृदय स्वास्थ्य में सुधार करता है। इसके अलावा, कद्दू में कैलोरी कम होती है, जिससे यह वजन नियंत्रित करने में भी सहायक होता है।

## कद्दू के स्वास्थ्य लाभ

1. आंखों की रोशनी में सुधार- कद्दू में विटामिन ए की उच्च मात्रा होती है, जो आंखों की रोशनी के लिए लाभकारी है।
2. प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाना- इसमें मौजूद विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा देते हैं।
3. हृदय स्वास्थ्य- कद्दू में पोटैशियम की मात्रा अधिक होती है, जो हृदय की सेहत के लिए अच्छा है।
4. वजन नियंत्रण- कद्दू में कम कैलोरी और उच्च फाइबर होने के कारण यह वजन घटाने में मददगार है।

5. **त्वचा की सेहत-** इसमें मौजूद विटामिन ई और अन्य एंटीऑक्सीडेंट त्वचा को स्वस्थ और चमकदार बनाए रखते हैं।

#### कढ़ू के सांस्कृतिक उपयोग

● कढ़ू का उपयोग विभिन्न सांस्कृतिक और धार्मिक अवसरों पर किया जाता है। भारत में, कढ़ू का उपयोग विशेषरूप से नवरात्रि और अन्य त्योहारों के दौरान किया जाता है। पश्चिमी देशों में, विशेषरूप से अमेरिका में, कढ़ू का उपयोग है लोवीन के दौरान 'जैकओ' लैन्टर्न' बनाने में किया जाता है।

#### कढ़ू की खेती और प्रकार

● कढ़ू की खेती विभिन्न प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है, लेकिन यह गर्म और आर्द्र जलवायु में अच्छी तरह उगता है। भारत में, विभिन्न प्रकार के कढ़ू उगाए जाते हैं, जैसे कि सफेद कढ़ू, हरा कढ़ू और पीला कढ़ू।

#### भूमि की तैयारी

- **भूमि का चयन-** कढ़ू की अच्छी उपज के लिए अच्छे जल निकासी वाली दोमट मिट्टी उपयुक्त होती है। मिट्टी का pH स्तर 6.0-7.5 के बीच होना चाहिए।
- **जुताई-** भूमि को अच्छी तरह से जोतकर भुरभुरा बना लें। 2-3 बार गहरी जुताई करें और पाटा चलाकर मिट्टी को समतल करें। बीज की बुवाई
- **बीज का चयन-** उच्च गुणवत्ता वाले, रोग मुक्त और प्रमाणित बीज का चयन करें।
- **बुवाई का समय-** कढ़ू तीन मुख्य मौसमों में उगाया जाता है। वसंत-ग्रीष्म, प्रारंभिक शरद ऋतु और वर्षा ऋतु। फरवरी-मार्च उत्तर भारतीय मैदानी इलाकों में ग्रीष्म कालीन फसल के लिए बुआई का समय है, जबकि पश्चिम बंगाल में बरसात के मौसम की फसल के लिए अप्रैल-मई और उत्तर भारत में जून-जुलाई है।
- बीजदर 6-7 किग्रा/हेक्टेयर उपयुक्त है। कढ़ू की बुवाई का सही समय फरवरी-मार्च और जून-जुलाई है।
- **बुवाई की विधि-** बीजों को 1.5-2.0 सेमी गहराई पर बोएं। पंक्ति से पंक्ति की दूरी 2-3 मीटर और पौधे से पौधे की दूरी 1-1.5 मीटर रखें।

#### बुआई की विभिन्न विधियाँ नीचे उल्लिखित हैं

1. **रिज बुआई/चैनल और पहाड़ी प्रणाली-** अधिक उपज के लिए खेती की चैनल और पहाड़ी प्रणाली सबसे उपयोगी और वैज्ञानिक है। खेत तैयार करने के बाद, 45 सेमी चौड़ी और 25-30 सेमी गहरी नालियाँ, अधिमानतः पूर्व से पश्चिम तक 3-4.5 मीटर की दूरी पर बनाई जाती हैं। प्रत्येक चैनल का उत्तरी ढलान बीज बोने या 60-75 सेमी की दूरी पर पौधे रोपने के लिए तैयार किया जाता है; वसंत-ग्रीष्म ऋतु में प्रति पहाड़ी 2-3 अंकुरित बीज बोए जाते हैं और अंकुरण के समय पर्याप्त नमी बनाए रखी जाती है। बेलों को चैनलों की जगह के बीच फैलने दिया जाता है।
2. **उथले गड्डे या समतल बिस्तर विधि-** 60 सेमी × 60 सेमी × 60 सेमी के उथले गड्डे खोदे जाते हैं और आंशिक सौर्यीकरण के लिए बुआई से पहले 3 सप्ताह के लिए खुला छोड़ दिया जाता है। प्रत्येक गड्डे को मिट्टी और खाद (प्रतिगड्डा 4-5 किलोग्राम), यूरिया (50-60 ग्राम), सिंगल सुपर फॉस्फेट (100-120 ग्राम), म्यूरेट ऑफ पोटाश (80 ग्राम) और फ्यूराडॉन (1.5 ग्राम) के मिश्रण से भरा जाता है। ) बीज बोने से पहले। गड्डों को भरने के बाद 2-3 सेमी की गहराई पर प्रति पहाड़ी 3-4 बीज बोये जाते हैं।
3. **गहरे गड्डे और खाई विधि-** नदी तल में कढ़ू उगाने के लिए गहरे गड्डे विधि का प्रयोग किया जाता है। 3 मीटर की दूरी पर 60-75 सेमी व्यास और 1.5 मीटर गहराई के गोलाकार गड्डे खोदे जाते हैं। ट्रेंच विधि में मिट्टी की परत की गहराई तक लगभग 2-2.5 मीटर की दूरी पर 60 सेमी चौड़ाई की खाइयाँ खोदी जाती हैं। खाइयों को अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद और उर्वरकों (एनपीके) के मिश्रण से भर दिया जाता है; 3-4 पूर्व-अंकुरित बीजों को 50-60 सेमी की दूरी पर खाइयों में 2-3 सेमी गहराई पर बोया जाता है।
4. **मेड़ विधि-** इस विधि में 15-20 सेमी ऊंचे मेड़ तैयार कर प्रत्येक मेड़ में 2-3 सेमी की गहराई पर 3-4 बीज बोए जाते हैं।

#### कढ़ू की प्रमुख किस्में

क्रमांक	प्रमुख किस्में	विशेषताएँ
1.	अरका चंदन	फल गोल, दबा हुआ फूल वाला सिरा होता है और छिलके का रंग हरा और सफेद धब्बे होते हैं। गाढ़ा नारंगी गूदा जो कैरोटीन से भरपूर होता है। उपज 33 टन/हे.
2.	अरका सूर्यमुखी	फल गोल और सिरे दबे हुए होते हैं और पकने पर छिलके का रंग नारंगी लाल और सफेद धारियाँ आ जाती हैं। फल का डंठल गोलाकार, जिसके सिरे उभरे हुए होते हैं। फल मक्खी के प्रति प्रतिरोधी। उपज 34 टन/हे
3.	काशी शिशिर (VRPKH-01) F1 हाइब्रिड	छोटे गोल, धब्बेदार और जल्दी पकने वाला संकर हरे फल (2-2.25 किग्रा), 3-4 फल/पौधे। उच्च उपज (38 42 टन/हेक्टेयर), गर्मी और खरीफ दोनों मौसमों में उगाया जा सकता है।
4.	काशी हरित	यह किस्म वंशावली चयन के माध्यम से एनडीपीके-24× पीकेएम के बीच संकरण से प्राप्त की गई है। लताएँ छोटी, पत्तियाँ गहरे हरे रंग की तथा सफेद धब्बों वाली होती हैं। फल हरे, गोलाकार, हरी अवस्था में वजन 2.5-3.0 किलोग्राम; 65 दिनों की फसल अवधि में 300-350 किंटल/हेक्टेयर उपज।

#### पोषण

कढ़ू को पोषक तत्वों से भरपूर फसल माना जाता है। खेत में 20-25 टन प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर की खाद अच्छी तरह मिला दें। अकार्बनिक उर्वरक का प्रयोग मिट्टी और कृषि जलवायु स्थिति के अनुसार भिन्न-भिन्न होता है। सामान्य तौर पर, खुले परागण वाली उन्नत किस्मों के लिए 100 किलोग्राम N, 80 किलोग्राम P<sub>2</sub>O, और 60 किलोग्राम K<sub>2</sub>O/हेक्टेयर की सिफारिश की जाती है। पी और के की पूरी खुराक और एन की आधी खुराक भूमि की तैयारी के समय लगाई जाती है। शेष एन को प्रारंभिक वृद्धि के समय (बुवाई के 20 दिन बाद), बेल लगाने के समय (बुवाई के 40 दिन बाद) और पूर्ण फूल आने पर (बुवाई के 60 दिन बाद) 3 विभाजित खुराकों में लगाया

जाता है। बोरॉन की कमी वाली मिट्टी में, 30 दिनों के अंतराल पर 0.03% बोरेक्स का दो पत्तियों पर छिड़काव फलों की पैदावार बढ़ाने के लिए फायदेमंद होता है। बोरॉन का मिट्टी में प्रयोग भी उतना ही प्रभावी है। अकार्बनिक के साथ-साथ एजोस्परिलम और फॉस्फो बैक्टीरिया जैसे जैव उर्वरकों का अनुप्रयोग।

### सिंचाई प्रबंधन

- **सिंचाई का समय**- बुवाई के तुरंत बाद पहली सिंचाई करें। उसके बाद 7-10 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करें, विशेषकर गर्मियों के मौसम में।
- **टपक सिंचाई**- जल संरक्षण के लिए टपक सिंचाई प्रणाली का उपयोग करें।  
फसल प्रबंधन
- **निराई-गुड़ाई**- बुवाई के 20-25 दिनों बाद पहली निराई-गुड़ाई करें और इसके बाद आवश्यकतानुसार करें।
- **मल्लिचंग**- नमी बनाए रखने और खरपतवार नियंत्रण के लिए मल्लिचंग करें।

### फसल कटाई

- **कटाई का समय**- बुवाई के 90-120 दिनों बाद जब कद्दू पूरी तरह से पक जाए और उसकी त्वचा कठोर हो जाए, तब कटाई करें।
- **भंडारण**- कटाई के बाद कद्दू को ठंडी और सूखी जगह पर भंडारित करें। भंडारण के दौरान नियमित निरीक्षण करें।

### कद्दू के कीट

क्रमांक	कीट	क्षति के लक्षण	प्रबंधन
1.	खरबूजा फल मक्खी	<ul style="list-style-type: none"> <li>● कीड़े फलों के गूदे को खाते हैं</li> <li>● फलों से रालयुक्त द्रवका निकलना</li> <li>● विकृत एवं कुरूप फल</li> <li>● फल समय से पहले गिर जाते हैं और खाने के लिए भी अयोग्य हो जाते हैं</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>● कटाई के बाद जुताई करके और मिट्टी पलटकर प्यूपा को बाहर निकालें</li> <li>● रिब्डलौ की को जाल फसल के रूप में उपयोग करें और पत्तियों की निचली सतह पर वयस्क मक्खियों के एकत्र होने पर कार्बेरिल 0.15% या मैलाथियान 0.1% लगाएं।</li> <li>● मक्खियों को फंसाने के लिए सिट्रोनेला तेल, नीलगिरी तेल, सिरका (एसिटिक एसिड) और लैक्टिक एसिड जैसे आकर्षक पदार्थों का उपयोग करें।</li> <li>● गंभीर संक्रमण होने पर जहरी लेचारे का प्रयोग करें</li> <li>● मिथाइल यूजेनॉल + मैलाथियान 50 ईसी को 1:1 के अनुपात में मिलाएं और 10 मिली लीटर चारे को 25/हेक्टेयर की दर से पॉलिथीन बैग में रखें।</li> </ul>
2.	हड्डाबीटल	<ul style="list-style-type: none"> <li>● क्लोरोफिल का स्क्रेपिंग</li> <li>● पत्तियों का कंकालीकरण एवं सूखना</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>● क्षतिग्रस्त पत्तियों को ग्रब और अंडे के समूह के साथ इकट्ठा करें और उन्हें नष्ट कर दें</li> <li>● ग्रब, प्यूपा और वयस्कों को उखाड़ने और नष्ट करने के लिए पौधों को हिलाएं</li> <li>● कार्बेरिल 50 डब्ल्यूपी @ 3 ग्राम/लीटर का छिड़काव करें</li> </ul>
3.	लाल भुंग कीट	<ul style="list-style-type: none"> <li>● ग्रब मिट्टी को छूने वाली जड़ों, तने और फलों को खाते हैं</li> <li>● वयस्क पत्ती और फूलों को खाता है।</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>● कटाई के तुरंत बाद खेतों की जुताई करें और शीत निद्रा में सोए वयस्कों को नष्ट कर दें</li> <li>● वयस्क भुंगों को इकट्ठा करें और नष्ट करें</li> <li>● मैलाथियान 50 ईसी अथवा 500 मिली या डाइमेथोएट 30 ईसी 500 मिली या मिथाइल डेमेटॉन 25 ईसी अथवा 500 मिली/हेक्टेयर का छिड़काव करें।</li> </ul>
4.	कद्दू कैटरपिलर	<ul style="list-style-type: none"> <li>● युवा लार्वा क्लोरोफिल सामग्री को नष्ट कर देता है</li> <li>● बाद में यह पत्तियों को मोड़कर जाल बना लेता है और भीतर से भोजन करता है</li> <li>● यह फूलों को भी खाता है और विकासशील फलों में छेद करता है</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>● प्रारंभिक चरण के कैटरपिलर को इकट्ठा करें और नष्ट करें</li> <li>● पैरासियोइड की गतिविधि को प्रोत्साहित करें- एपेंटेल्स एसपीपी।</li> <li>● निम्नलिखित किसी भी कीटनाशक का छिड़काव करें - मैलाथियान 50 ईसी @ 500 मिली/हेक्टेयर</li> <li>● डाइमेथोएट 30 ईसी @ 500 मिली/हेक्टेयर</li> <li>● मिथाइलडेमेटॉन 25 ईसी @ 500 मिली/हेक्टेयर</li> </ul>

**कढ़ू के रोग**

क्रमांक	कीट	क्षति के लक्षण	प्रबंधन
1.	पाउडरीमिल्ड्यू	<ul style="list-style-type: none"> <li>● यह खरबूजे, स्कैश, खीरे, लौकी और कढ़ू पर हमला करता है।</li> <li>● यह पत्तियों की ऊपरी सतहों, डंठलों और यहां तक कि संक्रमित पौधों के मुख्यतनों पर सतही, पाउडरयुक्त, भूरे-सफेद विकास के रूप में स्पष्ट होता है।</li> <li>● प्रभावित क्षेत्र पीले, फिर भूरे हो जाते हैं और मर जाते हैं।</li> <li>● शुष्क मौसम में, खस्ता फफूंदी के कारण पत्तियां समय से पहले गिर सकती हैं और फल समय से पहले पक सकते हैं।</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>● वेटेबल सल्फर @ 0.2% के प्रयोग से पाउडरी फफूंदी को नियंत्रित किया जा सकता है।</li> </ul>
2.	डाउनीमिल्ड्यू	<ul style="list-style-type: none"> <li>● लक्षण पत्तियों पर अनियमित चिकने भूरे क्षेत्रों के रूप में दिखाई देते हैं। नम परिस्थितियों में, ये क्षेत्र तेजी से बढ़ते हैं और प्रभावित पत्तियों की निचली सतह पर सफेद पाउडर जैसा विकास दिखाई देता है।</li> <li>● प्रभावित पत्ती जल्दी सूख जाती है और सिकुड़ जाती है। संक्रमित पौधों पर फूलों की कोपलें बौनी और विकृत हो जाती हैं।</li> <li>● पूरे पुष्प क्रम का स्वरूप सघन होता है और पत्तियों का अत्यधिक विकास झाड़ू जैसा स्वरूप दे सकता है।</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>● अच्छे खेत की स्वच्छता, फसल चक्र और प्रतिरोधी किस्मों के उपयोग जैसे निवारक उपायों की सिफारिश की जाती है।</li> <li>● थाइरम (2.5-3 ग्राम/किलो बीज) से बीज उपचार करने से उभरते अंकुरों को रोग के आक्रमण से बचाया जा सकता है।</li> <li>● एक प्रभावी नियंत्रण उपाय के रूप में 15 दिनों के अंतराल पर तीन बार डाइथेन जेड-78 (0.3%) का छिड़काव करने की भी सिफारिश की जाती है।</li> </ul>
3.	फाइटोफथोराब्लाइट	<ul style="list-style-type: none"> <li>● प्रसंस्करण कढ़ू के फलों का सड़न पी. कैप्सिसी के कारण होता है</li> <li>● फल की सतह पर घाव दिखाई देते हैं</li> <li>● मिट्टी के संपर्क में आने पर फल सड़न विकसित हो गईं</li> <li>● फल पर संक्रमित पत्ती गिरने के परिणाम स्वरूप फल सड़ जाता है</li> <li>● गंभीर रूप से संक्रमित फल नष्ट हो जाते हैं।</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>● अच्छे जल निकास वाले खेतों का चयन करके, निचले इलाकों से परहेज करके, गैर-बेल वाली फसलों के लिए गुंबद के आकार की उठी हुई क्यारियां तैयार करके और अधिक सिंचाई न करके मिट्टी की नमी का प्रबंधन करें।</li> <li>● उपकरणों पर मिट्टी में हलचल संभवतः एक महत्वपूर्ण साधन है जिसके द्वारा फाइटोफथोरा खेतों के बीच फैल गया है और यह उन खेतों में बीमारी की घटना का कारण बन सकता है जहां अतिसंवेदनशील फसलों का कोई इतिहास नहीं है।</li> </ul>
4.	बैक्टीरियलस्पॉट	<ul style="list-style-type: none"> <li>● यह फल पर छोटे-छोटे घावों के रूप में दिखाई देता है।</li> <li>● पत्ते पर छोटे, गहरे, कोणीय घाव होते हैं लेकिन उनका पता लगाना मुश्किल होता है।</li> <li>● फलों पर घाव गुच्छों में होते हैं और पपड़ी जैसे होते हैं। वे बड़े होकर फफोले बन जाते हैं जो अंततः चपटे हो जाते हैं।</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>● गैर कढ़ूवर्गीय फसलों के साथ फसलों का चक्रीकरण करें।</li> <li>● बैक्टीरिया वाले फलों के धब्बे की घटनाओं को कम करने के लिए फल के शुरुआती गठन के दौरान कॉपर स्प्रे लगाएं</li> </ul>

**आफ सीजन खेती**

मैदानी इलाकों में सर्दियों (दिसंबर-जनवरी) के दौरान पॉली हाउस में इसकी नर्सरी (अंकुर) उगाकर कढ़ू की खेती ऑफ-सीजन (सर्दियों के अंत और शुरुआती वसंत के मौसम) के लिए उपयुक्त है। फरवरी के प्रथम सप्ताह में पौधे रोपे जाते हैं। इस प्रकार इसकी कटाई मार्च के पहले पखवाड़े में होने वाली सामान्य बुआई की तुलना में एक या डेढ़ महीने पहले की जा सकती है। इस तकनीक से सीजन की शुरुआत में उपज के विपणन के कारण बोनस मूल्य मिलता है। पौध को छोटे पॉलीथिन बैग या प्लग ट्रे में पॉलीथीन शीट से बने पॉली हाउस के नीचे रखकर ठंडी हवाओं और ठंड से बचाया जाता है। उगाए गए पौधे जनवरी के अंत या फरवरी के पहले सप्ताह में लगाए जाते हैं। बांस की फर्श प्रणाली को अपनाने से, अधिक संख्या में पॉलीथीन बैग को समायोजित किया जा सकता है और पॉलीथीन घर के स्थान का कुशलतापूर्वक प्रबंधन किया जा सकता है।

**निष्कर्ष**

कढ़ू एक बहुउपयोगी सब्जी है जो न केवल हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है बल्कि सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। इसके विभिन्न प्रकार के पोषक तत्व और स्वास्थ्य लाभ इसे हमारे दैनिक आहार का एक आवश्यक हिस्सा बनाते हैं। इसके अलावा, इसका सौंदर्य और सजावट में उपयोग इसे और भी खास बनाता है। इसलिए, कढ़ू को अपने आहार में शामिल करें और इसके अद्वितीय स्वाद और स्वास्थ्य लाभों का आनंद लें।



## Irrigation System

वेदांत सिप्रंकलर सिंचाई प्रणाली अपनायें... अधिकतम फसल लेकर समृद्धि पाये ।

IS - 14151 Part-2



CML-2552958



HDPE COIL



एडाप्टर



टी



पी.सी.एन.



एंड प्लग



बेंड

**MFG: VEDANT POLY AGRO**

19-21, Industrial State, Rajnandgaon C.G.

Ph.: 07744-225022, Mob.: 93018-99909, 95841-20222

# रोपण

सदस्यता, लेख एवं विज्ञापन  
के लिए संपर्क करें

**अमित नामदेव**

संपादक - रोपण

संपर्क : 9174454149, 8103607021

Email : ropan.info@gmail.com

मकान नं. 7, गली नं. A-8, शाश्वत नगर, वैष्णो देवी मंदिर के पास, बोरियाखुर्द, रायपुर, छत्तीसगढ़ 492013